www.naidunia.com

नईदुनिया

नईदुनिया मीडिया प्रा.लि. का प्रकाशन

दिल्ली
गुरुवार, 3 मा
कीमत ₹ 3
कुल पृष्ठ 16+

तापमान

P-12

डीयू में निखरते झुग्गियों के 'नगीने'

धनंजय

नई दिल्ली। मध्य प्रदेश की उषा दिल्ली विश्वविद्यालय की मैत्रेयी कॉलेज में पढ़ती है। मध्य प्रदेश की ही रेखा माता सुंदरी देवी कॉलेज में पढ़ती है। बिहार का महेश दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग का छात्र है। लाजिमी है आप पूछेंगे इनमें खास क्या है। दरअसल, ये बच्चे राजधानी की झुग्गी बस्तियों के उन दर्जनों नगीनों में शामिल हैं, जो दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों में पढ़ते हुए जिंदगी में ऊंचा से ऊंचा मुकाम हासिल करने के सपनों से लबरेज हैं।

आशा नामक स्वयंसेवी संगठन की शोहबत में दिल्ली की 50 झुग्गी बस्तियों में हाई स्कूल में पढ़ने वाले ऐसे बच्चों की भरमार है जो दिल्ली विश्वविद्यालय के इलीट कॉलेज सेंट स्टीफन और लेडी श्रीराम कॉलेज तक में दाखिले का मंसूबा बांधे कड़ी मेहनत में जुटे हैं। क्यों न हो, इन्हें 'क्वीन्स इंगलिश' में प्रवीण करने के लिए ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन की शिक्षिकाएं जो आई हुई हैं। कौन जाने, इन्हीं में से किसी को कभी कोई मल्टीनेशनल कंपनी सबसे अधिक सैलरी देकर अपना बना ले। अब ऑस्ट्रेलिया से इन बच्चों के सामने अवसरों की ऐसी सौगात आई है कि उनके सपनों को पंख लग जाएंगे।

■ मेलबर्न विवि देगा इन्हें करिअर में मदद

अब दिल्ली की झुग्गी बस्तियों में पलने वाले बच्चों को गरीबी और जहालत के दुष्चक्र से निकाल कर ऊंची पढ़ाई के लिए बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में भेजने के लिए एक नए कार्यक्रम ने आकार लिया है। मंगलवार को ऑस्ट्रेलियन दूतावास में मेलबर्न में दो साल पहले स्थापित हुए ऑस्ट्रेलिया इंडिया इंस्टीट्यूट एवं मेलबर्न यूनिवर्सिटी के नोसाल इंस्टीट्यूट ऑफ ग्लोबल हेल्थ ने आशा के साथ करार किया।

झुग्गी बस्तियों की नारकीय स्थिति में बच्चे ककहरा भी सीख लें तो बहुत है, लेकिन यहां रहते हुए बच्चे ऊंची शिक्षा के सपने देखने लगें यह सहज ही यकीन करने वाली बात नहीं है। लेकिन पिछले कई वर्षों से शिक्षा की स्कीमों के जरिए इन झुग्गी बस्तियों की तकदीर संवारने में लगी बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. किरन मार्टिन अब तक झुग्गी बस्तियों के 400 बच्चों को दिल्ली विश्वविद्यालय भेज चुकी हैं। पद्मश्री से नवाजी गईं मार्टिन ने कहा- मैंने इस संख्या को 5000 पहुंचाने का लक्ष्य बनाया है। ऐसी स्थिति होगी कि हर अच्छे कॉलेज में झुग्गी बस्तियों के बच्चे होंगे।